BOMRIM

Bulletin on Microvita Research and Integrated Medicine

Official Bulletin of Society for Microvita Research and Integrated Medicine (SMRIM)

(Registered under Societies Registration Act 28, 1958 (Raj.) No. 73/UDR/08-09)

Vol. 1 No. 3 www.microvitamedresearch.com December 2009

Microvita Day — 31st December — माइक्रोवाइटा दिवस

जीव जगत का कल्याण, माइक्रोवाइटा अनुसंधान

✍ *सम्पादकीय*

माइक्रोवाइटा दिवस – संकल्प का आह्वान

इस युग के महान मनीषी श्री प्रभातरंजन सरकार ने मानवता के कल्याण के लिए जो सोपान दिए हैं उनमें ''माइक्रोवाइटा (अणुजीवत) का सिद्धांत'' बौद्धिक स्तर के उच्चतम शिखर पर स्थित दैदीप्यमान प्रकाश पुंज है। उसका आभामण्डल भविष्य के आध्यात्मिक पथिकों को अज्ञान की अमानिशा में सही मार्ग दिखायेगा। वह पल वास्तव में गौरवपूर्ण रहा होगा जब श्री सरकार ने इस सिद्धांत पर सर्वप्रथम अपना वक्तव्य दिया था। कोलकत्ता के तिलजला की 31 दिसम्बर की रात्रि; वर्ष 1986 अपनी अन्तिम स्मृतियों को समेटे, अवसान के करीब था। श्री सरकार ने विश्व अभ्युदय गोष्ठी के अध्यक्षीय प्रवचन में ''माइक्रोवाइटा–कोस्मिक फेक्टर का रहस्यमय उत्सारण'' विषय पर प्रथम बार इस धरा के जीव और निर्जीव जगत के कल्याण हेतु इस सिद्धान्त पर अपना मन्तव्य रखा तथा बुद्धिजीवियों के बौद्धिक विकास, वैज्ञानिकों के लिए अनुसंधान तथा अध्यात्मवादियों के लिए परमपुरूष की कृपा प्राप्त करने का सुअवसर प्रदान किया।

माइक्रोवाइटा (अणुजीवत) भौतिक और मानसिक दोनों स्तरों की वस्तु है। भौतिक स्तर पर वे भौतिकी की सूक्ष्मतम इकाई इलेक्ट्रोन से भी सूक्ष्मतर है तथा मानसिक स्तर पर वे मनस धातु की अतिंम इकाई एक्टोप्लास्म (चित्ताणु) से भी सूक्ष्म है। कहना न होगा कि इन दोनों सूक्ष्म सत्ताओं के बीच अणुजीवत का ही सेतु है। ये अबाध रूप से विश्व ब्रह्माण्ड में विचरण करते हैं। ये ही सृष्टि के मूल कारण है – प्राण का उत्स है। इन रहस्यमय माइक्रोवाइटा पर व्यापक गवेषणा की आवश्यकता है – इन पर अविलम्ब अनुसंधान की आवश्यकता है अन्यथा वर्तमान समाज की अनेक प्रकार की महत्वपूर्ण समस्याओं का सही ढंग से समाधान नहीं हो पायेगा।

वर्तमान में मनुष्य माइक्रोवाइटा से अनजान है। ये रहस्यमय हैं और केवल परमपुरूष ही, वैयष्टिक तथा सामुहिक सत्ताओं की प्रगति को त्वरित करने के लिये, किसी एक स्थान से अजस्र माइक्रोवाइटा का व्यवहार करते चले आ रहे है । वह परम सत्ता ही है जो माइक्रोवाइटा को काम में लगाने का कौशल जानते हैं और आध्यात्मिक साधकों को इन्हें काम में लगाने की शिक्षा भी दे सकते हैं। इस विषय पर श्री सरकार आशावादी हैं। वे कहते है, ''मैं सोचता हूँ, बल्कि मैं तो इस विषय पर दृढ़ निश्चयी हूँ कि वह दिन अधिक दूर नहीं जब मनुष्य इन माइक्रोवाइटा पर पूरी तरह से नियंत्रण पा सकेगा।'' तब एक वृहत मानव समाज की स्थापना होगी जहाँ ऋणात्मक माइक्रोवाइटा की शोषण वृत्ति से रहित, विश्व बन्धुत्व की भित्ति पर, अध्यात्म के स्वर्णिम आलोक में मानवता नाच उठेगी। क्यों नही इस रहस्यमय सिद्धांत के अनावरण दिवस 31 दिसम्बर को ''माइक्रोवाइटा दिवस'' के रूप में मनाकर इस सिद्धांत की परिभाषा को लोगों की जुबान पर प्रतिष्ठित कर दें, मानसिकता में घोल दें और आध्यात्मिकता से रंग कर नूतन वर्ष का अभिनन्दन करें।

इस शुभ अवसर पर आह्वान है बुद्धिजीवियों से, वैज्ञानिकों से और अध्यात्मवादियों से कि माइक्रोवाइटा दिवस पर इस संदर्भ में मनन–चितंन, अन्वेषण–विश्लेषण, और अन्तरमन के संश्लेषण पथ पर आगे बढ़ें; व्यक्तिगत कल्याण करें और समष्टिगत सेवा करने का संकल्प लें।

- डॉ. एस. के. वर्मा

नूतन वर्षाभिनन्दन – 2010

Microvita Research - Neohumanistic Welfare

वायरसजनित रोग - वायरस या माइक्रोवाइटा ?

विज्ञान के विकास के साथ–साथ बीमारियों के कारणों का पता लगाना आसान हो गया है। सूक्ष्मदर्शी यंत्र के आविष्कार ने जीवाणुओं की खोज कर जीवाणु जनित बीमारियों के सिद्धांत में क्रान्ति ला दी है। इलेक्ट्रोन माइक्रोस्कॉप ने और भी सूक्ष्म विषाणुओं की खोज कर इस दिशा में मार्ग प्रशस्त किया है। आज बीमारियों का एक समूह खोज लिया गया है जो विषाणुओं (वायरस) के कारण होना सिद्ध हुआ है। यहाँ तक कि जब वर्तमान में उपलब्ध साधनों द्वारा रोग के कारणों का पता नहीं चलता तो उसे वाइरस जनित बता दिया जाता है। ऐसी वाइरल बीमारियों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। अभी तक ज्ञात तकरीबन 1000 से 1500 तरह के वायरस में से 250 तरह के वायरस मनुष्यों में बीमारी पैदा करने में सक्षम है।

वर्तमान विज्ञान के अनुसार वायरस कई सामान्य बीमारियों का कारण हैं जैसे – जुकाम, फ्लू, दस्त, छोटी माता, बोदरी माता, जहर बाज आदि। कई वायरल बीमारियाँ जैसे रेबीज, हेमरेजिक फीवर, मेनिन्जाइटिस, पोलियो, येलो फीवर, सार्स, डेंगु और एड्स जानलेवा साबित हुई हैं। हाल ही में फैले स्वाइन फ्लू ने भी कई लोगों की जीवन लीला समाप्त की है। संभव हैं निकट भविष्य में मानवता को इनसे भी खतरनाक बीमारियों का सामना करना पड़े।

रोग - वायरस या माइक्रोवाइटा

वायरस बीमारियों के हिमसागर में हम एक शिला खण्ड का मात्र शिखर ही देख रहे है। जो कुछ भी हम देख रहे हैं, समझ रहे हैं वह वायरस का स्थूल प्रकार हैं जिसे इलेक्ट्रोन माइक्रोस्कॉप से देखा जा सकता है। उससे सूक्ष्म प्रकार को देखना संभव नही क्योंकि वह हमारी इन्द्रियों से परे हैं। उन सभी सूक्ष्म सत्ताओं के लिए उपयुक्त नाम होगा माइक्रोवाइटा। इसी वर्ग के अन्तर्गत जो माइक्रोवाइटा इलेक्ट्रोन माइक्रोस्कॉप के द्वारा देखे जा सकते हैं उन्हें ही वैज्ञानिकों ने वायरस नाम दिया है। उससे सूक्ष्म प्रकार के बारे में विज्ञान अभी मौन है क्योंकि वे इन्द्रिय ग्राहय नहीं है। उससे सूक्ष्म प्रकार को देखना संभव नहीं क्योंकि वह अपने कार्यजनित अभिनव द्वारा ही अनुभव किये जा सकते है। सबसे सूक्ष्म प्रकार तो केवल भावगम्य है जिन्हें विशेष बोध के द्वारा ही समझा जा सकता है। ''विशेष बोध '' वास्तव में ज्ञान बोध की सीमा के भीतर होने वाले वैचारिक प्रतिबिम्ब के अलावा कुछ नही है।

माइक्रोवाइटम (बहुवचन–माइक्रोवाइटा) का सिद्धांत महान मनीषी श्री प्रभात रंजन सरकार ने 31 दिसम्बर 1986 को दिया था। यह लेख उन्हीं के द्वारा दिये गये सिद्धांतो और दिखाए गये प्रयोगों के आधार पर लिखा गया है। उनके अनुसार माइक्रोवाइटा ही सबसे सूक्ष्म जीवित सत्ता हैं जो इलेक्ट्रोन और एक्टोप्लाज्म के मध्य अवस्थित है परन्तु न ही वो इलेक्ट्रोन है ओर न ही एक्टोप्लाज्म। दूसरे जीवों की तरह वे भी अस्तित्व रखते हैं, बढ़ते हैं और नष्ट होते हैं। वे अबाध रूप से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में विचरण करते हैं ओर इस जगत की उत्पति का मूल कारण हैं। ये बीमारियों के जनक है और उनके निवारक भी।

माइक्रोवाइटा - सबसे सूक्ष्म जीवित सत्ता

वैज्ञानिक मतानुसार वायरस सबसे सूक्ष्म जीवित सत्ता है परन्तु वास्तविकता यह है कि वायरस शब्द ही अस्पष्ट है। वायरस जैसा कुछ नही है, जो है वह माइक्रोवाइटा ही है। माइक्रोवाइटा सबसे सूक्ष्म जीवित सत्ता है जो परमाणु से सूक्ष्म, इलेक्ट्रोन से भी सूक्ष्म है, अतः परमाणु की तरह इसकी संरचना भी नही हो सकती। माइक्रोवाइटा में पदार्थ की बजाय ऊर्जा ज्यादा है अतः वे तन्मात्राओं द्वारा गतिमान होते है जबकि दूसरी सत्ताऐं तन्मात्राओं द्वारा गतिमान नहीं होती है।

चूंकि माइक्रोवाइटा सूक्ष्म जीवित सत्ता है अतः सिद्धान्तः ये भी स्थान घेरते है। सूक्ष्मता के आधार पर ये इथीरियल, मानसिक या अधि–मानसिक स्थान में अवस्थित हो सकते है। अधि–मानसिक स्थान वह है जहाँ मानसिकता आध्यात्मिकता के निकटतम सम्पर्क में आती है, और वही है इन दोनों के बीच की रजत रेखा। परन्तु अध्यात्मिक स्थान माइक्रोवाइटा के लिए नहीं है क्योंकि ये वह सत्ताऐं हैं जो भूमाजगत से सृष्ट है।

माइक्रोवाइटा की विशेषताएँ

कार्य के अनुरूप माइक्रोवाइटा ऋणात्मक, धनात्मक एवं उदासीन होते हैं। ऋणात्मक माइक्रोवाइटा पदार्थ निर्माण व उनका ज्ञान करवाते हैं। धनात्मक माइक्रोवाइटा मनोविज्ञान और पराज्ञान की वस्तु है। आध्यात्मिक रूप से उन्नत व्यक्ति माइक्रोवाइटा की गति व क्रिया पर नियंत्रण कर सकते हैं। इन उन्नत मानसिक स्तर वाले व्यक्तियों द्वारा नियंत्रित माइक्रोवाइटा मित्रवत् कार्य करते है और निम्न वृतियों से परिचालित व्यक्तियों द्वारा नियंत्रित होने से ये शत्रुवत व्यवहार करते है। हाँलाकि अपने स्वभाव से ही कुछ माइक्रोवाइटा मित्र तथा कुछ शत्रुवत होते है तथापि उन शत्रुवत माइक्रोवाइटा का नियंत्रण यदि उन्नत व्यक्तियों के हाथ होता है तो ये भी मित्रवत् व्यवहार करते हैं। इसलिए अच्छे लोगों का साथ, सात्विक विचारों वाले आध्यात्मिक समुन्नत व्यक्तियों का संग (सत्संग) व्यक्ति के शारीरिक तथा मानसिक स्तर पर धनात्मक माइक्रोवाइटा का स्तर बढ़ा देते हैं। और यही है सत्संग का वैज्ञानिक पक्ष और उसका आन्तरिक रहस्य।

सरंचना के आधार पर धनात्मक माइक्रोवाइटा ज्यादा एक्टोप्लास्मिक हैं बनिस्पत पदार्थ के। इसलिए ये माइक्रोवाइटा प्रथम तो मानसिक स्तर पर कार्य करते हैं तत्पश्चात् भौतिक शरीर पर। ये भौतिक और मानसिक जगत में अबाध गति से विचरण करते हैं और अध्यात्म के स्तर को स्पर्श करते है परन्तु अध्यात्म जगत की दहलीज को पार नहीं कर सकते। दूसरी ओर ऋणात्मक माइक्रोवाइटा में भौतिकता ज्यादा हैं बनिस्पत मानसिकता के। ये जड़ जगत में विचरण करते हैं तथा मानसिक जगत की परिसीमा को स्पर्श करते हैं परन्तु उसको पार नहीं कर सकते।

माइक्रोवाइटा चाहे धनात्मक हो या ऋणात्मक, अपनी स्वाभाविक जीवन यात्राा को पूर्ण कर मृत्यु को प्राप्त होते हैं। तापमान की अधिकता या न्यूनता उन पर कोई असर नहीं करती। जमाव बिन्दु पर वे सिकुड़ कर शीत निद्रा में चले जाते हैं तथा उच्च ताप पर फैल कर दीर्घ निद्रा में जाते है। इसलिए माइक्रोवाइटा को किसी भी तापमान पर नष्ट करना संभव नही है। यदि यह संभव होता तो कई बीमारियाँ, जो अभी भी मौजूद हैं, का अस्तित्व समाप्त हो जाता, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। दूसरी ओर वे ज्यादा जटिल तथा जीवन सहांरक हो गई हैं। माइक्रोवाइटा के इस विशेष गुण, जिसके द्वारा वे समस्त ताप और दाब के बधंनों से परे हैं, के तहत वे किसी भी ग्रही पर जाने में सक्षम है जहाँ दूसरे जीवों का साधारण अवस्था में जाना संभव नहीं है।

इन्फ्लुएन्जा, जो ऋणात्मक माइक्रोवाइटा जनित बीमारी है, का अस्तित्व इस पृथ्वी पर प्रथम विश्व युद्ध से पूर्व नही था। प्रथम विश्व युद्ध दौरान, जब युद्ध में मारे गए सैनिकों के सड़े हुए शवों ने ऋणात्मक माइक्रोवाइटा को दूसरे ग्रहों से पृथ्वी की ओर आकर्षित किया तब इस बीमारी का प्रादुर्भाव हुआ। शीत प्रदेशों में आज भी यह जीवन संहारक है। इस बीमारी की प्राकृतिक अवधि चार दिन है, चाहे दवा ली जाऐ या नहीं ली जाऐ, क्योंकि इन ऋणात्मक माइक्रोवाइटा की जीवन अवधि ही चार दिन है।

प्रश्न उठता है कि यदि ऋणात्मक माइक्रोवाइटा या रोग जनित माइक्रोवाइटा की जीवन अवधि निश्चित है तथा उनकी मृत्यु भी स्वतः ही होती है और उन्हें तापमान की चरम अवस्थाओं तथा दवाओं द्वारा भी नष्ट नहीं किया जा सकता तब उस अवस्था में इसके पहले की वे जीवों का विनाश करें, उनसे कैसे निजात पाई जाए ? माइक्रोवाइटा सिद्धांत के आधार पर उसका एक ही उपाय है और वह है उस जीव में धनात्मक माइक्रोवाइटा की संख्या में वृद्धि। केवल इसी प्रकिया से, अर्थात धनात्मक माइक्रोवाइटा की संख्या में वृद्धि करने से ही ऋणात्मक माइक्रोवाइटा की अकाल मृत्यु संभव है।

विचारणीय तथ्य है कि जब बीमार व्यक्ति में ऋणात्मक माइक्रोवाइटा, धनात्मक माइक्रोवाइटा को नष्ट कर देते हैं, तब उस व्यक्ति की मृत्यु निशचित है। रोग की दशा में दवाईयाँ केवल दर्द आदि लक्षण कम करती है। अतः ऐसा नहीं कहा जा सकता कि दवाओं ने बीमारी का शमन किया। ऐसी बीमारी तभी ठीक हो सकती है जब धनात्मक माइक्रोवाइटा की संख्या में वृद्धि हो। धनात्मक माइक्रोवाइटा ही ऋणात्मक माइक्रोवाइटा को विनष्ट कर उस बीमारी से मुक्ति दिला सकते हैं।

माइक्रोवाइटा का भौतिक प्रभाव

जब कुछ ऋणात्मक माइक्रोवाइटा मानव शरीर में प्रवेश करते हैं तब बैचेनी का अनुभव होता है। परन्तु जब लाखों–लाख माइक्रोवाइटा हाथी जैसे विशालकाय जीव में प्रवेश करते है तो कुछ ही पल में वह मृत्यु को प्राप्त होता है। यही अवस्था मनुष्य के शरीर के साथ भी संभव है। साधारणतया माइक्रोवाइटा रात्रि में, जब व्यक्ति नींद मे सो रहे होते हैं, ज्यादा सक्रिय रहते है।

ऋणात्मक माइक्रोवाइटा प्रथमतः निम्न चक्रों पर कार्य करते है तत्पश्चात् वे ऊपर कि ओर अग्रसर होते हैं। उनका प्रभाव अधिकतर दर्द, वृक्क की बीमारी तथा पेट व कूल्हें के अंगों पर देखा जा सकता है। जननांगो तथा उत्सर्जन तन्त्र पर यह विशेष प्रभाव दिखाते है।

उदासीन माइक्रोवाइटा जब शरीर में प्रवेश करते हैं तो कुछ विशेष प्रभाव नहीं छोडतें है। वे वृक्क, यकृत, पेट तथा छाती पर असर कर सकते हैं। धनात्मक माइक्रोवाइटा के शरीर और मन में प्रवेश होने से व्यक्ति को सुखद आभास होता है। परन्तु मात्र शरीर में प्रवेश होने से वे कोई विशेष असर नहीं दिखाते। यह विचारणीय तथ्य है कि धनात्मक माइक्रोवाइटा प्राकृतिक रूप से नहीं फैलते। ये विशेष रूप से उत्पादित तंरगों द्वारा ही कार्य करते हैं, जबकि ऋणात्मक माइक्रोवाइटा प्रकृति प्रदत कार्य करते हैं और प्राकृतिक शक्तियों द्वारा ही प्रसारित होते हैं।

माइक्रोवाइटा का मानसिक प्रभाव

माइक्रोवाइटा का ग्रन्थियों और उप–ग्रन्थियों पर असर के कारण मानसिक प्रभाव देखा जा सकता है। इनका भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक वृत्तियों पर प्रभाव पड़ता है। सभी तरह की 50 वृत्तियाँ इन धनात्मक और ऋणात्मक माइक्रोवाइटा द्वारा प्रभावित होती है। क्योंकि धनात्मक माइक्रोवाइटा ज्यादा एक्टोप्लास्मिक होते है अतः ये मनुष्य की सूक्ष्म और जड़ दोनों अभिव्यक्तियों को प्रभावित करते है। दूसरी तरफ ऋणात्मक माइक्रोवाइटा जो ज्यादा भौतिक है वे मात्र जड़ता को ही प्रभावित करते है। ऋणात्मक माइक्रोवाइटा के मस्तिष्क पर प्रभाव पड़ने से मन व्यथित होता है तथा मानसिक व्याधियों जैसे साइजोफ्रेनिया, मेनिया, डिप्रेशन, उदासीनता, सनकपन आदि का जन्म होता है। ये

सभी बीमारियाँ पूर्णतया मानसिक है। प्रयोगशाला में किये गये परीक्षणों में इन व्याधियों की दशाओं में कोई परिवर्तन नहीं आता जिससे कहा जाए कि इनका कारण उनकी अधिकता अथवा न्यूनता से है।

सैद्धान्तिक तौर पर ऋणात्मक और धनात्मक माइक्रोवाइटा एक ही है परन्तु उनका कार्य क्षैत्र अलग–अलग है। धनात्मक माइक्रोवाइटा अपनी यात्रा पीयूष ग्रन्थि से प्रारम्भ करते है तथा ऊपर और नीचे दोनो ओर बढ़ सकते है। ऋणात्मक माइक्रोवाइटा विशुद्ध चक्र के ऊपर नहीं बढ़ सकते तथा मात्र निम्न स्तर की अग्रसर होते है। क्योंकि धनात्मक माइक्रोवाइटा ऊर्ध्वगामी होते है अतः वे आध्यात्मिक साधना में प्रगति लाते है। केवल विशेष दशाओं में, किसी समुन्नत व्यक्तित्व अथवा गुरू की कृपा से इन्हें सहस्त्रार चक्र और गुरू चक्र तक बढ़ाया जा सकता है। अध्यात्मिक अनुशीलन, गहन ध्यान, सत्संग, कीर्तन तथा गुरू की कृपा द्वारा ही आध्यात्मिक गति को त्वरित किया जा सकता है। इतना ही नहीं, धनात्मक माइक्रोवाइटा द्वारा मानसिक विकास तथा सिद्धियों की प्राप्ति संभव है परन्तु आध्यात्मिक शक्ति तथा विकास इससे संभव नही क्योंकि ये माइक्रोवाइटा अध्यात्म क्षेत्र की सीमा को स्पर्श तो कर सकते हैं परन्तु उसे भेदने में असमर्थ है।

माइक्रोवाइटा व्याधियों का उपचार

वर्तमान में प्रचलित माइक्रोवाइटा बीमारियाँ जिन्हें वायरल व्याधियाँ कहा जाता है, उनका कोई विशेष उपचार नहीं है। वे पहले शरीर पर असर करती है जिससे शारीरिक वेदना होती है तत्पश्चात् वे मस्तिष्क पर असर करती हैं जिससे विषाद पैदा होता है। इनका उपचार मात्र लक्षण के आधार पर होता है जिससे वेदना कम होती है लेकिन स्वास्थ्य लाभ स्वतः ही होता है। इन ऋणात्मक माइक्रोवाइटा को अवधि पूर्व नष्ट करने का मात्र उपाय है धनात्मक माइक्रोवाइटा की बढ़ोतरी। इन मित्रवत् माइक्रोवाइटा को बढ़ाने का उपाय है मानसिक शुचिता, स्वाध्याय, भजन, कीर्तन, मानसाध्यात्मिक साधना विशेष तौर पर ध्यान और आध्यात्मिक समुन्नत लोगों की संगत (सत्संग)। ऐसे कई उदाहरण हैं जब स्पर्श मात्र से ही रोग का उपचार हुआ है। धनात्मक माइक्रोवाइटा का प्रयोग ही इसके पीछे छुपे रहस्य का विज्ञान है।

विशेष गौर करने का विषय है कि धनात्मक माइक्रोवाइटा की तादाद बढ़ाकर ऋणात्मक माइक्रोवाइटा को नष्ट कर स्वास्थ्य लाभ में गति लाई जा सकती है। साथ ही प्रयोग की गई दवाईयाँ यदि इस

To,

_____

_____

_____

_____

From :
Society for Microvita Research and Integrated Medicine (SMRIM)
28, Shivaji Nagar, UDAIPUR-313001 (Raj.) INDIA Mobile : 9414168910
E-mail : skvermaster@gmail.com, smrim08@gmail.com

कार्य में सहायक बन सकें तो ऐसी दवाईयाँ वास्तव में वरदान सिद्ध होंगी। इसके लिए उन औषधियों को सात्विक परिवेश में, सात्विक व्यक्तियों द्वारा तैयार करना होगा। इसमें कतइ संशय नही कि ऐसी दवाएं जो इस तरह के सात्विक वातावरण में, सात्विक लोगों द्वारा बनाई जाएगीं, वे साधारण दवाओं की अपेक्षा अधिक धनात्मक माइक्रोवाइटा को आकर्षित करेगी और ज्यादा प्रभावशाली सिद्ध होंगी।

ध्यान की प्रकिया ज्यादा धनात्मक माइक्रोवाइटा को आकर्षित करती है। यदि कोई व्यक्ति ऋणात्मक माइक्रोवाइटा से पीड़ित है जैसे वायरल हिपेटाइटिस, और यदि वह ध्यान का पूर्ण अभ्यास करता है तो वह बीमारी से शीघ्र मुक्ति पा जाएगा। कहने का अर्थ है कि ऋणात्मक माइक्रोवाइटा, रोग जनित माइक्रोवाइटा, शत्रुवत माइक्रोवाइटा का समुचित नियंत्रण धनात्मक माइक्रोवाइटा से ही संभव है।

उपसंहार

माइक्रोवाइटा सबसे सूक्ष्म जीवित सत्ता है। ऋणात्मक माइक्रोवाइटा विभिन्न रोगों का कारण है और उनका निदान है धनात्मक माइक्रोवाइटा की संख्या मे वृद्धि। ये ऋणात्मक माइक्रोवाइटा की ही बीमारियाँ हैं जिन्हें वर्तमान विज्ञान ''वायरस जनित रोगों'' की श्रेणी में रखता है। वास्तव में वायरस की बजाय माइक्रोवाइटा ही सही शब्द है। माइक्रोवाइटा तन्मात्राओं द्वारा गतिमान होते हैं और अबाध रूप से विश्व ब्रह्माण्ड़ में कहीं भी जाने में सक्षम है। ये समस्त ताप और दाब के बंधनों से परे हैं। मानसाध्यात्मिक साधना द्वारा विकसित मन ही इनके रहस्यों का अनावरण कर सकता है। इसके लिए तुरन्त ही भौतिक व मानसिक प्रयोगशालाओं में अनुसंधान की आवश्यकता है।

- डॉ. एस. के. वर्मा, वर्तिका जैन

"There should be extensive research work regarding this microvitum or these microvita. Our task is gigantic and we are to start our research work regarding these microvita immediately without any further delay, otherwise many problems in modern society will not be solved in a nice way".

- P. R. Sarkar

Published by : Society for Microvita Research and Integrated Medicine (SMRIM), Udaipur (Raj.) INDIA
Editor in Chief : Dr. S.K. Verma
Assoc. Editor : Vartika Jain
Printed at : National Printers, 124, Chetak Marg, Udaipur (Raj.)

FOR MEMBERS ONLY